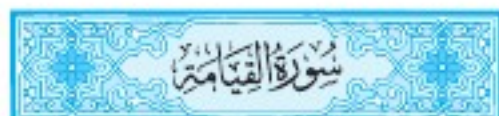


सूरह कियामा - 75



सूरह कियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम «सूरह क़ियामा» है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वही ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के दिन^[1] की!
2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा^[2] करने वाली अन्तरात्मा की।

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ

وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝

- 1 किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता है: उस का निश्चित होना। अर्थात् प्रलय का होना निश्चित है।
- 2 मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?
4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे^[1] भी।
6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?
7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।
8. और गहना जायेगा चाँद।
9. और एकत्र कर दिये^[2] जायेंगे सूर्य और चाँद।
10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?
11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।
12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।
13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे^[3] छोड़ा।
14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक

يَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ لَّجَمْعِ عِظَامِهِ ۖ

بَلَىٰ قَدِيرٌ عَلَيْنَا نُحْيِي بَنَاتُهُ ۖ

بَلَىٰ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۖ

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ

فَإِذَا ابْرَءَ الْبَصَرُ ۚ

وَحُفَّتِ الْقَمَرُ ۚ

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ

كَلَّا لَا وَزَرَ ۚ

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۚ

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۚ

بَلَىٰ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۚ

- 1 अर्थात् वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।
- 2 अर्थात् दोनों पश्चिम से अंधेरे हो कर निकलेंगे।
- 3 अर्थात् संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला^[1] प्रमाण है।

15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।
16. हे नबी! आप न हिलायें^[2] अपनी जुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस कुर्आन को।
17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।
18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।
19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।
20. कदापि नहीं^[3], बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।
21. और छोड़ देते हो परलोक को।
22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।
23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।
24. और बहुत से मुख उदास होंगे।
25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।

- وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرَهُ ۝
لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝
إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝
فَإِذَا قُرِئَهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝
تُخَرِّجُ عَلَيْنَا بَيِّنَاتِهِ ۝
كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝
وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝
وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝
إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝
وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَِاِسْرَةٍ ۝
تَرْجُوْنَ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقْتَرَهُ ۝

- 1 अर्थात् वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।
- 2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जibreel से वही पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4928, 4929)
इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।
- 3 यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

26. कदापि नहीं^[1], जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।
27. और कहा जायेगा: कौन झाड़-फूँक करने वाला है?
28. और विश्वास हो जायेगा कि यह (संसार से) जुदाई का समय है।
29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली^[2] से।
30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।
31. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।
32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।
33. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।
34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा बयर्थ^[3]?
37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो (गर्भाशय में) बूंद-बूंद गिराई जाती है?
38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर

- كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ النَّرَاقِيَ ۝
- وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝
- وَوُضِعَ آتُهُ الْغُرَاقِيَ ۝
- وَالْقَلْبَ السَّائِيَ بِالسَّائِيَ ۝
- إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسَائِيَ ۝
- فَلَا صَدَقَ وَلَا وُضِعَ ۝
- وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝
- ثُمَّ دَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَمْتَسِلِ ۝
- أَوَّلَ لَكَ فَأَوَّلِ ۝
- ثُمَّ أَوَّلَ لَكَ فَأَوَّلِ ۝
- أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۝
- أَلَمْ يَكُنْ نَظْفَةً مِّنْ مَّيْنٍ يُمْنَىٰ ۝
- ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝

1 अर्थात् यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवित नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जाती है।

2 अर्थात् मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे
बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी
बनाया।

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों
को जीवित करे दे?

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ
الْمَوْتَىٰ ۝

